पहला अध्याय

शमशेर बहादुर सिंह की जीवनी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१.० प्रास्ताविक

१.१ शमशेर बहादुर सिंह - जीवन परिचय

१.२ शमशेर बहादुर सिंह की शिक्षा

१.३ शमशेर बहादुर सिंह का व्यक्तित्व

१.४ शमशेर बहादुर सिंह का विवाह

१.५ शमशेर - लेखक के रूप में

१.५.१ दो आब

१.५.२ प्लॉट का मोर्चा

१.५.३ अनुवाद

१.६ शमशेर - कवि के रूप में

१.६.१ कुछ कविताएँ

१.६.२ कुछ और कविताएँ

१.६.३ चुका भी हूं नहीं मैं

१.६.४ इतने पास अपने

१.६.५ उदिता

१.७ निष्कर्ष ।

प्रथम अध्याय

१.० शमशेर बहादुर सिंह की जीवनी - व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

प्रास्ताविक -

शमशेर बहादुर सिंह हिन्दी साहित्य के एक महान कवि हैं। वे भावनात्मक अद्वैत और सौन्दर्य-चेतना के निरुपमेय कवि हैं। शमशेर बहादुर सिंह ने ग़ज़ल, मुक्तक, गीत, सॉनेट और छायावादी, रोमैण्टिक, सुर्रियलिस्ट, प्रयोगवादी तथा प्रतीकवादी काव्य सभी में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी है। शमशेर के साहित्य में विषायगत वैविध्य तो मिलता ही है, विधागत वैविध्य भी आश्चर्यजनक रुपमें पाया जाता है। इनका व्यक्तित्व बहुत ही रोमांटिक रहा है। हिन्दी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कवियोंमें शमशेर बहादुर सिंह का नाम खासतौर से लिया जाता है।

१.१ जीवन परिचय --

शमशेर बहादुर सिंह का जन्म १३ जनवरी, १९११ में देहरादून में एक जाट परिवार में हुआ। उनके पिता का नाम बाबू तारीफसिंह था। माता का नाम श्रीमती प्रभुदेई था। उनकी माँ की मृत्यू १९२० में हुई।

१.२ शिक्षा -

शमशेर बहादुर सिंह की आरम्भिक शिक्षा गोंडा और देहरादून में हुई। उन्होंने १९२८ में हाईस्कूल की परीक्षा पास की और फिर वे १९३१ में इंटरमिडिएट हुए। १९३१ में वे प्रयाग चले आए। प्रयाग विश्वविद्यालय में बी.ए. में दाखिला लिया और प्रयाग विश्वविद्यालय से ही १९३३ में बी.ए. पास किया। १९३४ में बी.ए. ऑनर्स अंग्रेजी में पास किया। आवश्यक उपस्थिति न होने के कारण वे परीक्षा में बैठ नहीं पाए। शमशेर शायरी के इश्क में तो पहले ही पड चुके थे, पर पेंटिंग की तरफ भी उनका जबर्दस्त रुझान था। बम्बई के जे.जे. स्कूल आफ आर्ट में विधिगत शिक्षा पा लेने के लिए खतोकिताबत भी की, पर आर्थिक अभाव के कारण वे वहाँ जा नहीं सके। परीक्षा न दे सकने के कारण पढाई से जबर्दस्त विरक्ति उन्हें तीन दिन के लिए बनारस खींच ले गई - कि वहाँ जाकर साहित्यिक जीवन शुरू करेंगे। पर चौथे दिन फिर प्रयाग वापस लौट आए कि इलाहाबाद ही इस काम के लिए क्या बुरा है ? पर वहाँ भी वे टिक न सके और १९३४ में ही देहरादून फिर वापस लौट गए। शमशेर नौकरी न करने का फैसला पहले ही कर चुके थे। दिल्ली में आकर उकील बंधुओं के कलाविद्यालय में विद्यार्थी बनकर कला की शिक्षा लेने लगे। जीवन निर्वाह के लिए वे साइनबोर्ड पेंटिंग का काम भी करते थे। पर १९३५-३६ में देहरादून में ही उकील कला - विद्यालय की शाखा खुलनेपर लौट आए और कला - अभ्यास के साथ - साथ ससुर की केमिस्ट की दुकान में कम्पाउंडरी भी करने लगे। १९३७ में वे बच्चन जी की प्रेरणा से प्रयाग आए और एम.ए. प्रीवियस में नाम दाखिल दिया, और १९३८ में प्रीवियस भी पास कर लिया। किन्तु १९३९ में तैयारी न होने के कारण फाइनल की परीक्षा नहीं दे पाए।

१.३ व्यक्तित्व --

शमशेर बहादुर सिंह का व्यक्तित्व बड़ा अजीबसा है। उनके व्यक्तित्व के कई पहलु पाए जाते हैं। शमशेर मूलत: एक समर्पित कवि हैं।

सन १९३९ में पंतजी के `रूपाभ` में कार्यालय - सहायक की हैसियत से उन्होंने काम किया। ग्यारह अंकों के बाद `रूपाभ` के बन्द हो जाने पर १९४१ में बनारस से निकलने वाली `कहानी` में त्रिलोचन के साथ संपादन कार्य शुरू किया। १९४१ में शिवदानसिंह चौहान के संम्पर्क में `हंस` के संम्पादक का कार्य भी किया। बनारस में ही लगभग सालभर नरेन्द्र शर्मा की एवजी के रूपमें रामेश्वरी गर्ल्स कालेज में अध्यापन का कार्य किया। १९४२ में वे जबलपुर अपने मामा के यहाँ चले आए। वहाँ वे १९४३ तक रहे। यहीं वे कम्यूनिष्ट पार्टी के सम्पर्क में भी आए। १९४४ में `इप्टा` के एक जलसे को देखकर अत्याधिक प्रभावित हुए। १९४५ में दूसरी बार बम्बई गए और पार्टी कम्यून में रहे। पार्टी ने उन्हें मेंम्बर बना लिया। शमशेर `नया साहित्य` में सम्पादन का काम करने लगे।

शमशेर ने १९७८ में सोवियत संघ की यात्रा की। उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मनित भी किया गया है। मध्यप्रदेश साहित्य परिषाद का `तुलसी पुरस्कार` उन्हें १९७७ में मिला। सन १९८७ में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा शमशेर को `मैथिलीशरण गुप्त` पुरस्कार मिला है। दोनों पुरस्कार उनकी `चुका भी हूँ नहीं मैं` रचना पर मिले है।

शमशेर बहादुर सिंह ने अपने जीवन का सर्वोत्तम प्रदीर्घ समय काव्यसाधना में बिताया है। शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का एक प्रभावशाली भवन अपने हाथों से ही तैयार किया है। उनका अभिव्यक्ति - शिल्प हिन्दी साहित्य को एक अनूठी देन है।

शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इम्प्रेशनिस्टिक चित्रकार की है। इम्प्रेशनिस्टिक चित्रकार अपने चित्र में केवल उन अंशों को स्थान देगा जो उसके संवेदना ज्ञान की दृष्टि से, प्रभावपूर्ण संकेतशक्ति रखते हैं। वह दृश्य चित्र में उन्हीं अंशों को स्थान देता है कि जो उसके संवेदनाज्ञान ज्ञान की दृष्टि से उस दृश्य के अत्यंत महत्वपूर्ण, अत: प्रगाठ महत्वपूर्ण और प्रभावपूर्ण अंग हैं। शमशेर ने अपने हृदय में आसीन चित्रकार को पदच्युत कर, कवि को अधिष्ठित किया है। इससे कवि का कार्यक्षेत्र बढ गया है। इम्प्रेशनिस्टिक ढंग का चित्रकार, जीवन की उलझी हुई स्थितियों का चित्रण नहीं कर सकता। वह उसके किसी दृश्यखंड को ही प्रस्तुत कर सकता है। उस विचित्र दृश्यखंड में भी, वह दृश्य से सूक्ष्म पक्षों को प्रस्तुत नहीं कर सकता। किंतु कवि वैसा कर सकता है। किन्तु चित्रकार से कवि का कार्यक्षेत्र बड़ा है। केवल इम्प्रेशनिस्टिक कला उसके लिए अधूरी है। शमशेर तूलसिकला पूर्णता के प्रति हमेशा आकर्षित रहे हैं। शमशेर वास्तविक भावप्रसंग में उपस्थित संवेदनाओं का चित्रण करते हैं।

`दूसरा सप्तक` के आत्मवक्तव्य में शमशेर ने स्वयं ही कहा है -

> सुन्दरता का अवतार हमारे सामने पल-छिन
> होता रहता है । अब यह हम पर है, कि हम
> अपने सामने और चारों ओर की रस अनंत
> और अपार लीला को कितना अपने अन्दर
> घुला सकते हैं ।' [१]

तात्विक रुपमें शमशेर की काव्यानुभूति सौन्दर्य की ही अनुभूति है । आजतक हिन्दी में विशुध्द सौन्दर्य का कवि यदि कोई हुआ है तो वह शमशेर है ।

अपने उसी वक्तव्य में आगे चलकर शमशेर कहते हैं --

> तस्वीर, इमारत, मूर्ति, नाच, गाना और कविता -
> इन सब में बहुत - कुछ एक बात अपने - अपने
> ढंग से खोल कर या छिपा कर या कुछ
> खोलकर कुछ छिपाकर कही जाती है ।' [२]

एकही बात है जो अपने ढंग से खोलकर या छिपाकर या कुछ खोलकर इन तमाम कविताओं में कही गयी है । सुन्दरता के अवतार की निरन्तर प्रक्रिया में सब कुछ समाया हुआ दिखता है ।

१.४ विवाह --

शमशेर बहादुर सिंह का विवाह १९३० में हुआ । उनकी पत्नी का नाम धर्मवती था । धर्मवती को टी.बी. की बीमारी थी । इसीलिए उसका देहान्त शादी के बाद पाच सालमें यानि १९३५ में हुआ । पत्नी के देहान्त के बाद शमशेर कुछ दिन पिता के पास रहे ।

१.५ शमशेर - लेखक के रूपमें --

कवि शमशेर बहादुर सिंह एक जमाने में गद्यकार के रूपमें भी प्रिय एवं चर्चित रहे हैं । शमशेर जी का आलोचक एवं सर्जक रूप एक साथ उपस्थित होता है । शमशेर की कहानियाँ भी आस्वाद्य हैं । शमशेर जी के दोनों गद्यसंग्रहों - `दो आब` तथा `प्लॉट का मोर्चा` - जो अब अप्राप्य हैं, तथा उनकी कुछ अप्रकाशित डायरियों का इसमें समावेश किया गया है । शमशेर बोलचाल के गद्य की लय को पहचानते हैं । बोलचाल के गद्य की यह लय उनकी कविताओं के गद्य की भी लय है । उनकी वाक्यरचना बदलती है, कभी सीधे - सादे वाक्य, कभी अनेक वाक्यांशों को गूँथकर रचे हुए लम्बे वाक्य, जवाहरलाल नेहरू की शैली की तरह ठहर-ठहरकर बढनेवाले वाक्य, आगे के हिस्से पीछे,और पीछे के हिस्से आगे - कभी तत्सम शब्द ज्यादा कभी हिन्दी का उर्दू रूप - लेकिन चाहे जैसी वाक्य रचना हो, चाहे जैसा शब्दचयन हो, उनके गद्य की लय प्राय: एक - सी बनी रहती है ।

कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं --

" गाँव की प्रकृति एक सार्थक शक्ति है ।

वह फलदा है और मानो कर्म से मुक्त है ।

मोहमुक्त एकदम नहीं, पर चिंतन रहित है ।

वह गाँव का परिचित अपरिचित स्वर्ग है ।

ग्राम निवासियों के आन्तरिक दुखों की एक क्षीण छाया

कभी कभी उसपर पड़ जाती है, "

पर वह शीघ्र ही कहीं खो जाती है ।"[३]

उनका क्रम यही है, केवल लय की विशेषता प्रकट करने के लिए उन्हें अलग - अलग कर दिया है । यहाँ वाक्य - रचना स्वाभाविक शब्द चयन में तत्सम रूपों की प्रधानता है पर चाल का धीमापन स्पष्ट है ।

शमशेर के लिए साहित्य का अध्ययन एक सजीव अनुभूति है और उस अनुभूति का प्रतिबिम्ब वह पाठक के मनमें गद्य के द्वारा वैसे ही उतारना चाहते हैं । जैसे अपनी किसी प्रेम या सौन्दर्य की अनुभूति का प्रतिबिम्ब-गद्य के ही द्वारा कविता में । शमशेर में बहुत बड़ी क्षमता इस बात की है कि वे राजनीतिक उतार - चढाव को सीधी-सादी लेकिन समर्थ शैली में मूर्तिमान कर सकते हैं ।

१.५.१ - दो - आब :

शमशेर पहले गद्यकार के रूपमें सामने आते हैं, फिर एक कवि के रूपमें । सन् १९४८ में वे 'दो आब' के लेखक के रूपमें उभरकर पाठकों के सामने

आये । `दो आब` उनके आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है । कुल सत्रह निबन्धों में उन्होंने हिन्दी और उर्दू के प्रसिध्द साहित्यकारों की कृतियों का मूल्यांकन किया है । रचनानिष्ठ समीक्षा और तुलनात्मक समीक्षा के उदाहरण इन आलोचनात्मक निबन्धों में मिल सकते हैं । पर यह आलोचनात्मक जाँच एक `आलोचक` की न होकर `सहृदय पाठक` की है, जो स्वयं कवि भी है । यही वह मुद्दा है, जिसके कारण इन निबन्धों को पढते हुए सतत, एक रसमयता का बोध होता है । `दो आब` के निबन्ध हिन्दी - उर्दू साहित्यकारों को लेकर लिखे गए हैं । छायावादी कवियों पर भी शमशेर ने निबन्ध लिखे हैं जैसे - `पल्लविनी` और छायावाद के बाद हिन्दी में आधुनिकताबोध लेकर आए । हिन्दी के आधुनिक काव्य के विकास में शमशेर बहादुर सिंह का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है । इसलिए इन निबन्धों में पाठक दिलचस्पी लेते हैं । इस कारण के अलावा शमशेर हिन्दी के उन थोडेसे कवियों में है जो बहुत अच्छा गद्य लिखते हैं । उनकी पीढ़ी के कवियों ने बीस साल पहले जैसा गद्य लिखा था, उसे देखते हुए शमशेर के निबन्धों का गद्य बहुत ही पुष्ट सुयश और कलात्मक बन पड़ा है ।

उनके गद्य में निरन्तर एक विकास की प्रक्रिया दिखाई देती है ।

जुलाई १९४१ के `हंस` में मुक्त छन्दपर उनका एक लेख छपा था जिसमें उन्होंने इस मुक्त-छन्द की भूमिका के बारेमें लिखा था , --

> कवियों और गद्य - लेखकों का सामान्य
> अंतर इसने मिटासा दिया है । यह बात हिन्दी
> काव्य पर उस समय पूरी तरह लागू न
> होती थी आज कितनी सच है, हर कोई
> देख सकता है ।` [४]

`दो आब` के निबन्धों में शमशेर ने कवियों के रोगी, अस्वस्थ मन की बार - बार चर्चा की है । उनके विषाद और निराशा की बार - बार आलोचना की है । जैसे -- `तिलिस्मे - खयाल` में हमारे रोगी समाज की झाँकियाँ `

`दो - आब` संग्रह में सबसे दिलचस्प लेख `सात आधुनिक कवि` है । यह `नया साहित्य में छपा था । शमशेर बहादुर सिंह के` मुसद्दस `और `भारत - भारती` की सांस्कृतिक भूमिका` और `राष्ट्रीय वसन्त की प्रथम कोकिला`, `इकबाल की कविता` इन निबन्धों का ऐतिहासिक महत्व बहुत है । वे एक अत्यन्त संवेदनशील कवि के निबन्ध हैं ।

१.५.२ प्लॉट का मोर्चा --

शमशेर का एक और गद्य-संग्रह है -- `प्लॉट का मोर्चा` । करीब तेईस कहानियाँ एवं स्केच इसमें संकलित हैं । इनकी गद्यभाषा की बारीक - से बारीक विशेषताओं को ये स्केच प्रस्तुत करते हैं । इसके अतिरिक्त इनके लेख और कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में तथा सम्पादनों में भी उपलब्ध हैं ।

स्वयं शमशेर कहते हैं ----

" मेरे छोटे से आँगन में टूटे-फूटे दो सदाबहार के गमले हैं, कभी मैं उनकी तरफ देखता हूँ तो कभी अपने इस पहले कहानी संग्रह की तरफ । और कुछ कहते नहीं बनता ।" [५]

१.५.३ अनुवाद --

कविताओं एवं समीक्षात्मक लेखों तथा निबन्धों के अतिरिक्त शमशेर ने कुछ अनुवाद भी किये हैं, जिसमें --' आश्चर्य लोक में एलिस' तथा 'कामिनी', 'हश्शु' और 'पी कहाँ' बहुत प्रसिध्द हैं। अन्य अनुवादों में हैं 'षाड्यन्त्र' (अंग्रेजी उपन्यास) जो १९४० में प्रकाशित हुआ, 'पृथ्वी और आकाश', उर्दू साहित्य का इतिहास' (एजाज हुसैन, १९५६) संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (१९४०) आदि।

इस तरह शमशेर की कहानियों का गद्य भी आस्वाद्य है। कवि शमशेर बहादुर सिंह एक जमाने के गद्यकार के रुपमें भी प्रिय एवं चर्चित रहे हैं।

१.६ शमशेर - कवि के रुपमें ---

शमशेर बहादुर सिंह हिन्दी कविता के 'आत्मीय' और दुरुह' कवि माने जाते हैं। सन १९५१ में ज्ञानपीठ प्रकाशन से' अज्ञेय' द्वारा सम्पादित 'दूसरा सप्तक' प्रकाशित हुआ। भवानीप्रसाद मिश्र, शकुन्तला माथुर, हरिनारायण व्यास, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय तथा धर्मवीर भारती ये छ: कवि हैं। इसमें शमशेर की जो कविताएँ संकलित हैं, उन्हें देखकर उनके काव्य संभार का बहुत कुछ सही अनुमान लगाया जा सकता है। इसमें इनकी बीस रचना संकलित हैं।

१.६.१ `कुछ कविताएँ` --

सन १९५९ में शमशेर का पहला स्वतंत्र काव्य - संग्रह `कुछ कविताएँ` प्रकाशित हुआ । इस संग्रह की कविताओं का चयन जगत शंखधर ने किया है । वे इसके प्रकाशक भी थे । इसमें कुल छत्तीस कविताएँ हैं । शमशेर प्रयोगशील हैं । शमशेर की काव्यगत धारणा उनकी दो कविताओं से स्पष्ट की जा सकती है । `कुछ कविताएँ` की `राग` और `कुछ और कविताएँ` की `बात बोलेगी` नामक कविताओं में कवि अपनी काव्यभिव्यक्ति संबंधी भावना को प्रभावात्मक बिम्बों में व्यंजित करने का प्रयत्न करता है । शमशेर आन्तरिक अनुभव की सहज अभिव्यक्ति को काव्य मानते हैं ---

" मैंने कहा ---

शाम ने मुझसे कहा :
राग अपना है ।` [६]

यह राग अपना है अर्थात काव्य आत्मिक होता है । अनुभव की स्थिति के लिए कवि `सरलता` का `आकाश` और `नींद` की इच्छाएँ कहकर उसकी सहजता को स्वीकारता है ।

`एक पीली शाम` के चित्र में `पतझार का जरा अटका हुआ पत्ता` एक अनुभव का वस्तुपरक बिम्ब प्रस्तुत करता है --

" अब गिरा अब गिरा वह अटका हुआ आँसू

सान्ध्य तारक - सा

अतल में ।` [७]

इस बिम्ब का पूर्ण संयोजन है, क्योंकि सन्ध्या के तारे का पतझार के पले - सा

अटका होना और उसकी ` अब गिरा अब गिरा ` की स्थिति पूरी कविता को आंतरिक संगति देती है ।

१.६.२ ` कुछ और कविताएँ --

शमशेर बहादुर सिंह का दूसरा काव्य-संग्रह सन १९६१ में राजकमल प्रकाशन से ` कुछ और कविताएँ ` संग्रह प्रकाशित हुआ । इसमें सन १९४१ से सन १९६० तक की उनकी सभी प्रकार की कुल उनचास रचनाएँ संकलित हैं । इन कविताओं का चयन उन्होंने (शमशेर) ने स्वयं किया है । विषय - वैविध्य और शिल्पगत विशेषताएं,दोनों ही दृष्टियों से यह उनका उत्तम काव्यसंग्रह माना जा सकता है ।

एक ओर जहाँ ` टूटी हुई बिखरी हुई ` और ` साक्न ` जैसी उत्कृष्ट प्रेम रचनाएँ हैं ।

साक्न में कवि की मन:स्थिति अनेक बिम्बों में उभरती और उजागर होती है । कविता का आरम्भ ही देखें तो ऐसा है ---

` मैली हाथ की धुली सादी

सा है

आसमान । ` [८]

मैली हाथ की धुली से .... अब तक यह देखा जा सकता है कि कवि ने इस ` अ - साधारण ` सुबह के फिसल जाते रंगों को किस तरह से पकडा है ।

देखिए साक्न का एक और उदाहरण ---

" साक्न आया है:
खूब समझाता हूँ मैं
साक्न की ये पाठकें
मूँद रही हैं मुझको ।" [९]

शमशेर को छायावादी कवियों के भाव-बोध और काव्य शिल्प से विद्रोह करनेवाले प्रयोगशील कवियों में रखा गया है । शमशेर के साथ उत्तर छायावादी रोमॅण्टिक कवियों को भी लिया जा सकता है क्योंकि उन्होंने छायावाद की परम्परा में ही रोमॅण्टिक ,प्रेम और सौन्दर्य की अधिक सीधी और ऐन्द्रिक अभिव्यक्ति की है । शमशेर रोमॅण्टिक संवेदन के स्तरपर छायावादियों की परंपरा में आते हैं, केवल उनमें प्रेम और सौन्दर्य की मांसलता,ऐन्द्रिकता तथा आवेश अधिक है --

" बहुत - से तीर बहुत - सी नावें, बहुत - से पर इधर
उडते हुए आये, घुमते हुए गुजर गये
मुझको लिये, सबके सब । तुमने समझा
कि उनमें तुम थे । नहीं, नहीं, नहीं ।
उनमें कौन था । सिर्फ बीती हुई
अनहोनी और होनी की उदास
रंगीनियाँ थीं । फक्त ।" [१०]

शमशेर ने टूटी हुई, बिखरी हुई कविता में प्रकृति का सौन्दर्य स्पष्ट किया

है । प्रकृति को भी कवि ने भाव - बोध के कई स्तरों पर ग्रहण किया है ।

`कुछ और कविताएँ में `बात बोलेगी`, `नाम राम पाम दिशा` जैसी प्रगतिवादी भावधारा से प्रभावित रचनाएँ भी हैं ।

उनकी `बात बोलेगी` की सभी रचनाएँ जो देश के स्वतन्त्रता - आन्दोलन या मार्क्सवाद सम्बन्धी हैं --

> शद्ध - भाव, `प्रेम` वर्जित कर दिया गया है ।
> मेरे जीवन में कितना ।`[11]

वह व्यक्तिगत जीवन में किसी गहरी विवशता एवं तीव्र निराश के क्षणों में उन्होंने मार्क्सवाद को ग्रहण किया । वह मानता है कि मानवता का उज्ज्वल भविष्य और समय की गति की एकही दिशा है, और वह है मार्क्सवाद की वाम दिशा । वहीं पर हमारी एकता और मुक्ति है । वे कहते हैं ----

> राम वाम वाम दिशा
> समय साम्यवादी ।`[12]

इस तरह `दूसरा सप्तक `को गिनकर कुल सात काव्यसंग्रह उन्होंने रचनाशीलता के इन पाँच दशकों में दिये हैं ।

> कुछ और कविताएँ में शमशेर का वक्तव्य देखिए ---

> जिस विषय पर जिस ढंग से लिखना मुझे रुचा,
> मन जिस रूपमें भी रमा, भावनाओं ने उसे अपना
> लिया , अभिव्यक्ति अपनी ओर से सच्ची हो, यही
> मात्र मेरी कोशिश रही - उसके रास्ते में किसी
> भी बाहरी आग्रह का आरोप या अवरोध मैंने
> सहन नहीं किया ।`[13]

इस वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है कि शमशेर जहाँ अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण दे रहे हैं, शमशेर जैसे व्यक्ति का ऐसा भाव नहीं हो सकता कि अन्य जो किसी विशिष्ट या निश्चित रूप और शैली में लिख रहे हैं, वे केवल किसी वाद, फैशन या चलन के फेर में ऐसा कर रहे हैं। शमशेर के शुध्द कवि का मूल प्रेरणा - स्रोत यही है और बावजूद अपने ` समाज - सत्य के मर्म को ढालने ` के प्रयत्न के उन्होंने अपने कवि कर्म के माध्यम से अपनी भावनाओं, प्रेरणाओं और आन्तरिक संस्कारों में अपने को ही पाने का प्रयत्न किया है।

` कुछ और कविताएँ ` में कुछ रचनाएँ ऐसी हैं, जो सुररियल भावसृष्टि को भी प्रस्तुत करती हैं। इसमें उनके गीत, गजल, सॉनेट, रुबाई सभी समाविष्ट हैं।

१.६.३ ` चुका भी हूँ नहीं मैं --`

चौदह वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद उनका तीसरा काव्यसंग्रह सन १९७५ में ` चुका भी हूँ नहीं मैं `, राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। इसके चयनकर्ता भी जगत शंखधर रहे। इस संग्रह पर उन्हें सन १९७७ में साहित्य अकादमी पुरस्कार से समानित किया गया। इसमें कुल पचास कविताएँ संकलित हैं, जिनमें एकाध गीत, एकाध सॉनेट प्रयोग, एक जहर में लिखी नज्म को छोडकर प्राय: सभी अछान्दस रचनाएँ हैं। अन्य संग्रहों की तुलना में इस संग्रह की अधिकतर रचनाएँ उनकी सामाजिक अभिमुखता को प्रकट करती हैं। शिल्प प्रयोग की दृष्टि से ` दो मोती कि दो चन्द्रमा होते ` उनकी विशिष्ट रचना ` एक नीला दरिया बरस रहा है ` में, जो रचना-प्रक्रिया की कविता है,

शमशेर कहते हैं ---

" मगर

मेरी पसली में है - गिन लो ।

व्यंजन और उनके बीच में हैं ।

स्वर

उसे मेरा ही कहो फिलहाल "[14]

अर्थात् - जैसे कविता, कवि के भीतर से जन्म लेती है, वैसे ही भाषा भी कवि के भीतर से जन्म लेती है ।

शमशेर प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं । अपनी " प्रेम की पाती " में वे कहते हैं ---

" प्रेम की बानी सांची वे सौंची "[15]

प्रेम का रंग उनकी कविताओं में गहरा है । यह प्रेम अनेक स्तरों पर उनकी कविताओं में आलेखित हुआ है ।

इस तरह प्रयोगधर्मिता उनके इस संग्रह की भी विशेषता बन जाती है । उनकी दो कविताओं से सम्बन्धित चित्रों के रेखांकन भी इसमें पाये जाते हैं ।

" चुका भी हूँ मैं नहीं " के दूसरे संशोधित संस्करण में " शरद-पंख " रचना, उसके रेखांकन के साथ दी हुए है । पूरे कैनवास के ऊपरी भाग पर रेखाओं से पंखों का आकार रेखांकित किया है । देखिए ---

बिजली के
ऑरोरा
शंख - पंख
झलझलकर[१६]

श्रृंग माल
एक मौन विस्मय से

उड़े - उड़े

भूतल पर

नव विधान से।'

'सूर्यास्त' कविता भी ऐसी ही है। देखिए --

थाह लेता
विशाद
जल विशाद
विशाद।[१७]

१.६.४ 'इतने पास अपने' --

सन १९७५ के बाद सन १९८० में राजकमल से उनका चौथी काव्य-संग्रह 'इतने पास अपने' प्रकाशित हुआ। इसमें उनकी अधिकतर रचनाएँ सन १९७५ के बाद की हैं। कुछ पहले की भी हैं। उनकी चेतना का विकास किस दिशा में हुआ है यह इस संग्रह की रचनाओं से जाना जा सकता है। कुल ३३ कविताओं का यह संकलन अपनी पहली रचना में ही उनकी प्रयोगधर्मिता की कला का स्वीकार, साहित्य और समय के चिन्तन पर है। साथही मृत्युबोध सम्बन्धी रचनाएँ हैं, जो उनका प्रिय विषय रहा है।

अपनी` रोम सागर के बीचों बीच` इस कविता में शमशेर कहते हैं ---

` हमीं एक हमेशा के आलसी

पिछड़ गये हैं

क्यों आखिर ...` [१८]

` इतने पास अपने` में ऐसी भी रचनाएँ हैं, जो ` विशिष्ट` शमशेरी अन्दा` को स्थापित करने का आरम्भिक बिन्दु बनती हैं। यही बादमें, चलकर शमशेर की कविता का स्थायी गुण बन गया। ये रचनाएँ उनके कविस्वभाव का परिचय देती हैं।

` हमारी जमीन` में शमशेर कहते हैं ---

` मैं तो खैर .....

मेरी जमीन भी क्या

एक दिन ....

एक दिन ....

खैर।

जो नियम है वह नियम है

जो नियम है वह -- है। [१९]

यह रचना देखकर ऐसा लगता है कि कविता सृजन के दरम्यान उस लोक को, जिसकी परछाइयाँ छूने की बात की है, मानो सजीव कर लिया है। एक` स्टिल लाइफ` चित्र में भी वे सूर्योदय की कल्पना करते हैं। ` सुप्रभात` नन्दन का एक चित्र है, जिस पर उन्होंने कविता लिखी है। कविता के अंत में शमशेर कहते हैं ---

प्लेट का अस्पष्ट क्षितिज निकट
मेज पर ही
खिल रहा है कठिन दाडिम प्रात
गुमसुम [२०]

वान गॉग के चित्र को देखने पर उनके मनमें जो भाव प्रकट होता है -- देखिए ---

सोने का एक ज्वार उठा ...
और
गहरे नीले अनगिन पंखों से
नीले अनगिन फेनिल पंखों से
उसे ढाँप लेने को
व्यर्थ व्यर्थ
उठा बवण्डर । [२१]

प्रकाशन वर्षा की दृष्टि से उनको नवीनतम काव्यसंग्रह सन १९८१ में प्रकाशित हुआ । सम्भावना प्रकाशन से प्रकाशित 'बात बोलेगी' की योजना पुरानी थी । कुल अडतीस रचनाओं का यह संकलन घटना या विषाय - साम्य की दृष्टि से दो खण्डों और सात विभागों में बँटा है ।

१.६.५ 'उदिता' --

सन १९८० में वाणी प्रकाशन से शमशेर का 'उदिता' संग्रह प्रकाशित हुआ है । यह, एक तरह से, कवि की अभिव्यक्ति के संघर्ष का कवित्वपूर्ण दस्तावेज है । संग्रह के आरंभ में सन १९८० में प्रकाशित 'उदिता' की भूमिका है, और अन्त में सन १९४९ में अप्रकाशित उदिता की भूमिका है, दोनों भी भमिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । इसमें उनकी सन १९३३-३४ से लेकर

सन १९९१ तक की रचनाएँ संकलित हैं । इसमें संकलित रचनाओंपर छायावाद या उत्तर-छायावाद और प्रगतिवाद का प्रभाव देखा जा सकता है । `उदिता` की भूमिका में स्वयं शमशेर कहते हैं ---

> "उस बिचले तब्के की ज़िन्दगी के भँवर - खामोश तेज होते हुए भँवर के चक्कर इस और ऐसी कविता में मिलेंगे, जिससे निकलने के लिए एक तिनके का सहारा सिर्फ सोशलिज्म ही आड़े आया । जी, वही `प्रगतिवाद का आन्दोलन` जो कि दरअसल आज की जिन्दगी की सच्ची परख का आन्दोलन है, कला को जिन्दगी की गहरी नींवों पर ऊपर उठाने का आन्दोलन है, ये गहरी नींवें मार्क्सवाद के विज्ञान की हैं ।` [२२]

अपनी अप्रकाशित `उदिता` की भूमिका में शमशेर कहते हैं --

> "वह चीज जो कि वास्तव में मेरी कविता में आते - आते नहीं आ पायी ।` [२३]

अपनी `उदिता` की एक ग़जल में शमशेर कहते हैं ---

> "मुश्क बू-ए-जुल्फ उसकी घेर ले जिस जा हमें,
> दिल से कहता है उसी को अपना काशाना कहें । [२३]

शमशेर ने `उदिता` में कुछ शेर भी लिखे हैं । वे कहते हैं ---

> "हो चुकी जब खत्म अपनी ज़िन्दगी की दास्ताँ
> उनकी फरमाइश हुई है, इसको दोबारा कहें ।` [२४]

१.७ निष्कर्ष

ऊपर के विवेचन के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शमशेर बहादुर सिंह एक नि:सन्देह, अद्वितिय कवि हैं। उनकी काव्य आत्मा नितान्त स्वाभाविक है। कवि शमशेर बहादुर सिंह गद्यकार के रूपमें प्रिय रहे और शमशेर ने गद्य कम लिखा, पर एक आलोचक और निबन्धकार के रूपमें उनका नाम उल्लेखनीय है। इस प्रकार विचारों से मार्क्सवादी शमशेर बहादुर सिंह संस्कारों में व्यक्तिवादी और अनुभवों से रूमानी हैं। उनका व्यक्तिवादी संस्कार उन्हें मध्यवर्गीय व्यक्ति की अनुभूति को अभिव्यक्त करने को प्रेरित करता है। उनकी अधिकांश कविताओं का स्वर कुंठित प्रेम का है। इस कुंठित प्रेम तथा शरीर सौन्दर्य को कवि छायावादियों से भी अधिक छल के साथ व्यक्त करता है।

शमशेर बहुत सूक्ष्म सौन्दर्यबोध के कवि माने जाते हैं, किन्तु कठिनाई यह है कि सौन्दर्य यहाँ वहाँ की कुछ पंक्तियों में अलग - अलग ढंग से उभरकर आता है। इस तरह शमशेर बहादुर सिंह एक महान कवि के रूपमें हमारे सामने आते हैं।

स न्द र्भ

१ दूसरा सप्तक - आत्मवक्तव्य में शमशेर, पृ.८०

२ दूसरा सप्तक - वक्तव्य में शमशेर, पृ.८१

३ शमशेर पर सं.सर्वेश्वर दयाल सक्सेना , पृ.५४

४ - वही - पृ.५३

५ शमशेर बहादुर सिंह कुछ गद्य रचनाएँ, पृ.१६४

६ कुछ कविताएँ - ` राग `, पृ.९

७ कुछ कविताएँ - एक पीली शाम `, पृ.२१

८ कुछ और कविताए - ` साक्न `, पृ.६३

९ कुछ और कविताएँ - ` साक्न `, पृ.६०

१० टूटी हुई, बिखरी हुई - कुछ और कविताएँ, पृ.५४

११ गत बोलेगी , पृ.६४

१२ सम्य साम्यवादी, गत बोलेगी, पृ.६४

१३ कुछ और कविताएँ - शमशेर बहादुर सिंह, पृ.५

१४ चुका भी हूँ नही मैं - एक नीला दरिया बरस रहा है, पृ.२२

१५ चुका भी हूँ नहीं मैं - प्रेम की पाती ` , पृ.२८

१६ कवियों का कवि - शमशेर - डॉ.रंजना अरगडे, पृ.१७५

१७ चुका भी हूँ नहीं मैं - सूर्यास्त, पृ.२३

१८ इतने पास अपने - शेष सागर के बीचों बीच , पृ.३१

१९ हमारी जमीन - इतने पास अपने, पृ.२२

२० एक स्टिल लाईफ - इतने पास अपने, पृ.६३

२१ वान गॉग का एक चित्र - इतने पास अपने, पृ.६२

२२ उदिता, की भूमिका में शमशेर, उदिता,पृ.१०५

२३ अप्रकाशित उदिता की भूमिका, उदिता, पृ.१०५

२४ गजल - उदिता । अभिव्यक्ति का संघर्ष । शमशेर - पृ.१००

२५ उदिता - शेर ।